संस्कृत साहित्य में भ्रष्टाचार और विश्वासघात

सादिक मण्डल
सह अध्यापक
श्री चैतन्य कॉलेज, हावड़ा

सारांश

हमारा विषय बेहद गंभीर और संवेदनशील मुद्दा है। हाल ही में, टीवी, अखबार, व्हाट्सएप या यूट्यूब खोलने पर, कुछ समाचार शीर्षक देखे जा सकते हैं अदालत के आदेश से फर्जी ग्रुप डी भर्ती को रद्द करना, एसएससी या सीएससी शिक्षकों की भर्ती में भ्रष्टाचार, या चुनावों में धांधली, या चुनावों में धांधली। उजागर नहीं करना, कैमरे के सामने कैमरे या कागजात की तोड़फोड़। यह सब और हर कोई जानता है, नेताओं के भ्रष्टाचार की चर्चा है, वे तौलिया के साथ पैसे लेते भी देखे जाते हैं, चुनाव से पहले और चुनाव के बाद कई झूठे वादे करते हैं चुनाव, लोगों का भरोसा टूटा, राजनीति, माफिया, भ्रष्टाचार के साये से पैसा निकालना लगभग टीवी पर नजर आने लगा है या अखबार देखने की इच्छा लगभग खत्म हो गयी है. हालाँकि, इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि लोगों के मन में लोभ, वासना, हिंसा, लालच, लालच दिन–ब–दिन बढ़ते जा रहे हैं। ज्ञात मनुष्य अज्ञात के अँधेरे में धीरे–धीरे लुप्त होता जा रहा है, मानवीय विवेक और मानवता लुप्त होती जा रही है, मित्र रूपी शत्रु द्वारा मानव जीवन को घायल किया जा रहा है और हम।

देखना, नाक–भौं सिकोड़ना, या मुस्कुराकर कहना– शाबाश, शाबाश, चारों ओर यही सब चल रहा है। ऐसे में हमारी चर्चा वाकई बहुत गंभीर है।

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है:

सादिक मण्डल

संस्कृत साहित्य में भ्रष्टाचार और विश्वासघात

शोध मंथन,
दिस0 2017,
पेज सं0 160–166
Artcile No. 26 (SM 664)
http://
anubooks.com?page_id=581

भ्रष्टाचार की समस्या एवं जाँच

यह तो निश्चित है। लेकिन यह समस्या केवल अस्थायी है? सर्वकालिक समस्या नहीं? या यह एक व्यक्तिगत समस्या है, या यह सार्वभौमिक है? हमें इस बारे में सोचना होगा। क्योंकि समाज कोई निर्जीव पदार्थ नहीं है, समाज एक जीवित इकाई है तो समाज में अच्छा और बुरा, सौंदर्य और कुरूपता, प्रकाश और अंधकार, गुण और भ्रष्टाचार, विश्वास और विश्वासघात, सत्य और झूठ होगा, इसलिए अच्छे और बुरे, संत और खलनायक, नायक और खलनायक का शाश्वत सह–अस्तित्व होगा। .उस समय से लेकर आज तक, चाहे राजतंत्र हो या लोकतंत्र, हर जगह भ्रष्टाचार के बिना कोई भी व्यवस्था टिक नहीं सकती। लेकिन ये सही भी हो सकता है, अभी जो माहौल है, जो हालात हैं, भ्रष्टाचार और झूठ की बातें अक्सर हमारे आस–पास सुनाई देती हैं, हमारे कान चुभते जा रहे हैं। हाँ, सही कह रहे हैं, अगर भ्रष्टाचार न होता तो दुनिया एकतरफा हो जाती। भ्रष्टाचार की भी एक प्राचीन परंपरा है. हमारे संस्कृत ग्रंथों में भ्रष्टाचार का एक अर्थ है। सिद्धांत है – 'नयनात नीतिरुचते, या नयति इति नीति।' भ्रष्टाचार आम तौर पर संदर्भित करता है कि क्या उचित है – नियमों के खिलाफ एक कार्य – इसलिए भ्रष्टाचार। सरल शब्दों में रिश्वत देकर अपना काम या उद्देश्य पूरा करना। 'आत्मोदयः परग्लानिर्द्वयंग नितिरितीयतिद्य' (शिशुपालवध, 2.30) और जो न्याय या सत्य के विपरीत है वह मिथ्या है, अपनी बात न मानना विश्वासघात है। चाणक्यय की चतुर बुद्धि में झूठ का रूप है– 'मनसा नट बचसा नट प्रकाशयेत।' तत्सम – मनसंन्याद्वचस्यान्यत् कार्य्यमन्यद्दुरात्मनम्। मार 1.102

भ्रष्टाचार के कारण और सीमा

भ्रष्टाचार के इतने सारे सिद्धांत पहले मेरी नजर में नहीं आए पिताजी। लेकिन भ्रष्टाचार के कारण के बारे में कुछ भी नहीं कहा गया है, मुझे लगता है कि भ्रष्टाचार का असली कारण मनोवैज्ञानिक है और इसके कारणों और परिणामों में हम सभी सीधे तौर पर शामिल हैं। इस समस्या की जड़ में लोगों का असीमित लालच, स्वार्थ या स्वार्थ–सिद्धि और आत्म–भोग है। भ्रष्टाचार तब शुरू होता है जब जो लोग अपने लालच को पूरा करने के लिए, आनंद की अपनी असीमित इच्छाओं को पूरा करने के लिए सिद्धांतों या कानूनों के खिलाफ गतिविधियों में संलग्न होते हैं। और हममें से जो लोग इसे न देखने का दिखावा करते हैं, भले ही परोक्ष रूप से, हम उस भ्रष्टाचार का समर्थन करते हैं या भ्रष्टाचार के शिकार बन जाते हैं। क्योंकि, जो अन्याय करते हैं और जो अन्याय सहते हैंकृ वे सभी समान रूप से दोशी हैं। हालाँकि, भ्रष्टाचार व्यक्तिगत स्तर पर शुरू होता है, लेकिन इसका दायरा व्यक्तिगत स्तर से परे – परिवार, समाज और राज्य प्रणाली– हर जगह तक फैला हुआ है। भ्रष्टाचार एक ऐसी बीमारी है जो व्यक्ति को लाभ पहुंचाती है लेकिन समूह, परिवार, समाज या राज्य को भी भ्रष्ट कर देती है।

वह कैसे करता है? यदि एक व्यक्ति दोशी है तो दूसरा व्यक्ति कैसे दोशी हो सकता है? एक व्यक्ति का पुण्य कैसे प्राप्त करें? तो समाज में अच्छे लोगों का क्या महत्व है? नीति का पालन कोई नहीं करता? और यह व्यक्ति से लेकर सामूहिकता को कैसे प्रभावित कर सकता है? समाज में अभी भी कई लोग हैं जो अनैतिक कार्य देखते हैं तो विरोध में कूद पड़ते हैं, विरोध करने के लिए गांधी प्रतिमा के नीचे भूख हड़ताल पर बैठ जाते हैं, जिंदगी गुजर जाएगी लेकिन बोलने से नहीं चूकेंगे, किसी भी प्रकार की हरकत से दूर रहें धोखाधड़ी का, धोखे का, जो कहो वह करो। बेहद शक्तिशाली होने के बावजूद वे बेहद

साधारण जीवन जीते हैं। अभी भी कई नेता हैं, उनके लिए विचारधारा ही अंतिम शब्द है दरअसल, उनके कार्यों को सम्मान से नमन किया जाता है। उनका दृष्टिकोण आज भी लोगों को नए सिरे से जीने का सपना दिखाता है। उनकी परोपकारी भूमिका वास्तव में निर्विवाद है। कौटिल्य का 'प्रजा सुखे सुखंग राजनाः प्रजानांग च हिते हितम्।'

सोचा कौटिल्य की चर्चा करते समय मुझे अर्थशास्त्र की याद आ गई, आपको क्या लगता है अर्थशास्त्र के इस उद्धरण से क्या सिद्ध करने का प्रयास किया जा रहा है कि कौटिल्य की लोक कल्याण उन्मुख राज्य व्यवस्था में कोई भ्रष्टाचार नहीं था? अगर नहीं तो फिर उन्होंने अधिकारियों पर चार तरह की चाल की बात क्यों की? ऐसे में पैसे का इस्तेमाल अधिकारियों के भ्रष्टाचार को जानने का सबसे अच्छा तरीका है ऑर्थोपाधा– यह जानने का एक साधन है कि क्या कोई कर्मचारी वित्तीय प्रलोभन दिखाकर गलत या अनैतिक कार्य करने के लिए प्रलोभित है या इच्छुक है। जिस तरह आज के नेता और मंत्री कागज या रूमाल में लपेटकर पैसे लेते थे, उसी तरह शाही अधिकारी भी पैसे लेते थे, शायद अब की तरह ऊंचे दाम पर भी पैसे मांगते थे। भ्रष्टाचार है – अर्थदुषणं ओर्थानां अपाहरणं देयानां अदानम् – अर्थात राजकोश में जमा धन का गबन करना, जिस व्यक्ति का धन देना है उसे पूरा देने के बजाय उसका कुछ धन हड़प लेना। या जन कल्याण के लिए आवंटित धन का पूरा उपयोग किये बिना ही उसमें से कुछ राशि काट लेना या उसमें से कुछ भाग निकाल देना – ये सब उस युग में भी थे और आज भी हैं। जब राज्य भ्रष्ट नौकरशाहों या मंत्रियों द्वारा चलाया जाता है तो लोग नाराज होते हैं।

जनपदनिवेश के इस अध्याय में कौटिल्य का सुझाव है– वल्लभैः कामिकैः नतेनैरान्तपलैशा पिदितम्। शोद्येत्पुशुसंगैश्च क्षमानांग बनिकपतम् ।। मतलब, 2.1.38

लेकिन आजकल भ्रष्ट नेता को बिना सजा दिए ही पार्टी की संपत्ति समझा जाता है। दोशी मंत्रियों के तत्काल इस्तीफे या बर्खास्तगी को लौकिक–भूताधम या अपराधियों के रूप में सुझाया गया है। हितोपदेश में दुर्योधन के मंत्री शकुनि तथा मगधराज नन्द के मंत्री शाक्त का भी उल्लेख है। जो लोग अनैतिक तरीकों से धन लेते हैं, उनसे धन वसूल करने के लिए कहावत का उपदेश यह है – जिस प्रकार तौलिये को बार–बार निचोड़ने पर उसमें से पानी निकल आता है, उसी प्रकार आर्थिक रूप से दुष्ट लोगों से बार–बार निचोड़ने पर चुराया हुआ धन वापस मिल जाना चाहिए। उन्हें पीड़ा दे रहे हैं. महाभारत में कहा गया है– जिस प्रकार पानी में मछलियाँ इच्छा या अनिच्छा से पानी पीती हैं, उसी प्रकार सत्ता में बहुत सारा पैसा होने पर नेता और मंत्री आर्थिक रूप से भ्रष्ट हो सकते हैं।

सामान्य कौटिल्य काल में भी ये बातें थीं और इसी वजह से किसी राजदूत या दूत को विदेश भेजते समय उस राजदूत या दूत पर नजर रखने के लिए दूसरे जासूस को नियुक्त किया जाता था, ताकि पहला राजदूत आर्थिक रूप से भ्रश्ट न हो जाये. अब चूँकि बहुत से लोग स्कूल की बाधा पार नहीं कर पाते थे, हो सकता है कि रोक की मस्तानीगिरी करने वाले आसानी से नेता और मंत्री बन जाते हों, लेकिन मंत्री बनने के लिए विभिन्न गुणों का होना और विभिन्न विज्ञानों में पारंगत होना आवश्यक था, इसके बाद भी विभिन्न परीक्षण आयोजित किए जाते थे उन पर। क्योंकि, राजशाही के आराम से नेताओं और मंत्रियों को असली माहौल लुभा सकता है. कई बार, यदि राजा या शाही सरकार स्वयं आर्थिक रूप से अपारदर्शी होती, तो मंत्री भी आर्थिक रूप से भ्रष्ट हो जाते।

उस युग के मंत्रियों को किस प्रकार आर्थिक लालच देकर भ्रष्ट किया जा रहा था, इसे महाभारत के धृतराष्ट्र के रिश्वतखोर मंत्रियों के उदाहरण से समझा जा सकता है, जो पैसा खाते थे और अपनी बात से मुकर जाते थे। जब धृतराष्ट्र ने आँख बंद करके पंचपांडव और कुंती को वारणावर्त जतुगिरा भेजने का फैसला किया, तो उन्होंने अपना डर व्यक्त किया कि जो मंत्री पांडवों के प्रति वफादार हैं, वे सभी युधि ाष्ठिर के पक्ष में होंगे और आसानी से पांडव जतुगिरा को स्वीकार नहीं करेंगे। लेकिन मूर्खता से भरे दुर्योध ान ने अपने पिता के डर को नष्ट कर दिया और कहा – मंत्री, अमात्य, लोग – सभी – 'अर्थात् पूजिताः कृधुबम अस्मत्सहायस्ते भविष्यन्ति मुख्य रूप से, यानी वर्तमान समय के एक भ्रष्ट पार्टी नेता की तरह, उन्होंने मंत्रियों को खरीदने की बात की। राजकोश के धन से अमात्यकृ और बाद में देखा गया कि इन सभी मंत्रियों, अमात्य, सचिवों, सेनापतियों ने दुर्योधन का धन लेकर पांडवों को वारणावर्त जाने का लालच दिया है।'

बिल्कुल, और यही कारण है कि हस्तिनापुर के सिंहासन पर युधिष्ठिर के दावे के बावजूद धृतराष्ट्र हमेशा अपने बेटे दुर्योधन को राजा बनाना चाहते थे। दुर्योधन भीम को बचपन में जहर देना चाहता था। यह सब शकुनि ने पासे के पाखंडी खेल में पांडवों को हरा दिया।

पीछे धृतराष्ट्र का गुप्त समर्थन भी था। हालाँकि महाभारत के युद्ध को एक धार्मिक युद्ध कहा गया था, फिर भी दोनों पक्षों ने अपनी जीत हासिल करने के लिए भ्रष्टाचार और धोखे का सहारा लिया, चाहे वह अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु की हत्या हो, और अर्जुन द्वारा कर्ण की हत्या हो, या कृष्ण की चाल से जयद्रोथ का वध हो। या युद्ध के मैदान में शिखंडी की उपस्थिति में भीष्म के सामने हथियार डालना, और धर्म राजा युधिष्ठिर की– अश्वत्थामा हाकृगज आदि युक्तियाँ या भीम ने गदा युद्ध में दुर्योधन को कैसे हराया, ये घटनाएँ सभी को पता हैं।

धर्मचक्रधारी श्रीकृष्ण की बात क्यों छोड़ी जाय? जो बार–बार कहता है कि उसने स्वयं को ध ार्म की स्थापना के लिए बनाया है, क्या उसके पास बहुत सारे भ्रष्टाचार और झूठ हैं? हालाँकि, उन्होंने स्वीकार किया कि उन्हें धार्मिक स्थापना या व्यापक हित के लिए नहीं बल्कि उन कार्यों को करने के लिए मजबूर किया गया था।

यदि आप धर्मशास्त्र या अर्थशास्त्र का अध्ययन करें तो पता चलेगा कि सरकार के उच्च पदस्थ मंत्रियों, अधिकारियों से लेकर किसी भी शक्तिशाली दल के नेता तक, सभी कमोबेश भ्रष्टाचार में लिप्त हैं। मनुसंहिता और अर्थशास्त्र में इन्हें उतेकाचका, प्रबांचक कहा गया है, आज की शब्दावली में – तोलाबाजी, तोलाबाज, रिश्वत लेने वाला तथा अन्यायपूर्ण और अतार्किक कार्य करने वाला व्यक्ति। मकान की योजनाओं को गलत तरीके से मंजूरी देना, पैसे के बदले शराब की दुकान का लाइसेंस जारी करना। सड़क पर कारों को रोककर पैसे लेने के कई तरीके हैं, एक ही शाही सरकार से जबरन वसूली, शाही वस्तुओं का गलत वितरण, भाई–भतीजावाद, शाही कर्तव्यों की उपेक्षा, लापरवाही, भ्रष्टाचार में लिप्त होने की इच्छा भ्रष्ट मंत्रियों या शाही सेवकों के लक्षण हैं।

इन भ्रष्ट लोगों या जेबकतरों पर प्रोफेसर नृसिंह प्रसाद भादुड़ी की टिप्पणी – आजकल हमारे शहरों–गांवों–अर्धशहरों में 'जेबकतरे' कहलाने वाले लोगों का एक अजीब समूह राज करता है। वे सीध ो तौर पर राजनीतिक दल के सदस्य होते हैं, कभी–कभी राजनीति के समर्थन से पोशित होकर, वे विभिन्न

धमकियों का उपयोग करके लोगों से धन उगाही करते हैं।' प्रोफेसर भादुरी मनु के अनुसार 'उत्कोच' शब्द का अर्थ तथा 'औपधिकः' तथा मनु की टीका कुल्लूकवत्त मत के हवाले से कहा गया है कि उपाधिक एक प्रकार के धोखेबाज होते हैं जो भय दिखाकर धन निकालते हैं और उस धन से अपनी जीविका चलाते हैं। प्राचीन काल में भी ऐसे आतंकित व्यक्तियों की कोई कमी नहीं थी, यह मनु की सूची में विशेषण के प्रयोग से स्पष्ट है। उल्लेखनीय है कि तब भी मनु ने चिकित्सक वैद्यों को ऐसे व्याख्याकारों की सूची में शामिल किया था। इन दिनों निजी नर्सिंग होम के दवा बिलों या अत्यधिक बिल वृद्धि में भी भ्रष्टाचार स्पष्ट दिखाई दे रहा है।

यह स्मृति शास्त्री क्यों है – मनुसंघिता, इसके पहले भी इस 'कराप्शन' या भ्रष्टाचार के कुछ संकेत मिलते हैं, जहां एक वर्ग के लोग घर में मूर्ति रखने की धारणा बनाकर आम लोगों में इंद्र की मूर्तियां खरीद–फरोख्त कर रहे हैं शत्रु का नाश करेंगे, 'का इमांग दशविह मोर्मैद्रंग कृणति धेनुविह।' दस गायों के बदले बेची जा रही है इंद्र की मूर्ति, दुश्मन मारा जाएगा तो वापस ले ली जाएगी मूर्ति 'जादा वृत्राणि जुंघानाद अथैनांग मय पुनर्दादत द्यद्य' एक वर्ग के लोगों ने इन झूठे वादों से आम आदमी के विश्वास का फायदा उठाकर लोगों को धोखा दिया है।

लोगों को धोखा देना उस युग या इस युग के कई लोग इस तरह के काम में शामिल थे या हैं। आजकल नेताओं और मंत्रियों को पैसे और हितों की कोई परवाह नहीं है. एक समय नेता हमेशा सिद्धांतों की राह पर चलते थे, मानव कल्याण के लिए अपना बलिदान दे देते थे और अब नेता भ्रष्टाचार की दुर्गंध से निकलकर देश को घोर अंधकार की ओर ले जा रहे हैं। वे वोट से पहले एक वोट के बाद पूरा वोट बदल देते हैं। ये हित के लिए कोई भी कार्य करने से नहीं हिचकिचाते, इनकी कथनी, करनी, व्यवहार में कोई एकरूपता नहीं होती। ये हमें पंचतंत्र की एक कहानी में मिलेगा दूसरी शताब्दी में पंचतंत्र के समय के आसपास नेताओं के भ्रष्टाचार को कहानी की आड़ में खूबसूरती से प्रस्तुत किया गया है। हम सभी वह कहानी जानते हैं।

यह पंचतंत्र की कहानी है, वह हिरन और केकड़ा एकः बृद्ध–बकः खुत्क्षमाकंठः सरस्तिर पर विराजमान, मुक्तफलप्राकरशैरस्रुपप्रभाहैधरतलमविसिंचन रुरोड। मया हि मत्स्यदानंग प्रति परमवैराग्यत्या संप्राप्तांग प्रयोपबेशानोंग कृतांग तेनाहांग समीपगतानापि मत्स्यन्न भक्षयामिद्यद्य अर्थात सरबर के किनारे एक बूढ़ा हिरन बैठा हुआ था और प्रचण्ड धारा में आँसू बहा रहा था। यह देखकर सभी जल–मछुआरे उसके पास आए और उससे ऐसे घृणित कार्य का कारण पूछा। तब चतुर बूढ़ा बक टी सभी को सूखे से डराकर एक नए जलाशय में ले जाने का सपना देखता है। बिल्कुल इस दौर के राजनीतिक नेताओं की तरह। वे चुनाव से पहले वादे भी करते हैं, तरह–तरह से नए सपने दिखाते हैं, पारंपरिक तौर–तरीके बदलने की बात करते हैं। कभी–कभी लोग लोगों की भलाई के लिए व्रत रखते हैं। लेकिन सत्ता में आने के बाद वे अपने पिछले सभी वादों को भूल जाते हैं और दिन–ब–दिन आम जनता को मूर्ख बनाकर या धोखा देकर अपने लक्ष्य को हासिल करने में लगे रहते हैं। लेकिन वह दोहरापन लंबे समय तक नहीं चल सकता। क्योंकि सभी प्रजा मूर्ख नहीं होती, केकड़े जैसी कुछ जागरूक प्रजा अवश्य होनी चाहिए जो शासक के दोहरेपन और धोखेबाज धोखेबाज (जिसके शब्द और कार्य ऐसे दुष्ट शासक को नीचे लाते हैं) को समझते हैं, जो कम से कम इस कहानी का संदेश है। ऐसा ही एक विचार

महाभारत की कनिकनीति में मिलता है – किसी विशेष परिस्थिति में राजा का व्यवहार क्या होगा, इस संदर्भ में कहा गया है–

अंजलिंग सप्तहोंग संतबंग शिरसा पदवंदनम्
अश्रुप्राप्तनचौव कर्ततब्यंग भूतिमिच्छत (महा, 12.136.17)

अर्थात, एक समृद्ध राजा या कोई भी व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं के लिए हाथ जोड़कर प्रार्थना करेगा या शपथ लेगा, कभी वह लोगों को समवाचन से प्रभावित करेगा, कभी वह सिर झुकाकर प्रणाम करेगा, कभी वह आँसू बहाएगा। आँसू के साथ।

आदर्श राज्य हम राम शासनकाल की बात नहीं करते! क्या झूठ, भ्रष्टाचार कम नहीं हो रहा? कि मंथरा की कूटनीति या दुष्ट मंत्रणा, स्वर्ण मृग द्वारा सीता को बहकाना, या भिखारी के भेष में रावण द्वारा सीता का अपहरण, बालक की गलत हत्या, गर्भवती सीता की इच्छा पूर्ति।

अपने वादे को पूरा न करके सीता के प्रति पुरुषोत्तम राम के क्रूर व्यवहार से लेकर, राम द्वारा बाली की गलत हत्या तक, हर जगह भ्रष्टाचार स्पष्ट है। प्रजा का नाश करना या कल्याण के नाम पर प्रजा का धन हड़पना राजा का अत्यंत पाप कर्म है और यह ऐसी बात है जो प्रजा को पसंद नहीं आती या अच्छी नहीं लगती और इस बात को समझने में किसी को कोई कठिनाई नहीं होती कि प्रजा का नाश हो। प्रजा अथवा धोखेबाज शासक अपरिहार्य है। वस्तुतः जागरूक प्रजा द्वारा राजनीतिक सत्ता परिवर्तन की यह संस्कृति, पतनशील निरंकुश, निरंकुश सत्ता की यह संस्कृति हमें बार–बार अर्थशास्त्र, धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र की याद दिलाती रही है।

मृच्छकटिक ही क्यों? भ्रष्टाचार का वर्णन आधुनिक साहित्य में भी किया गया है – दीपक घोष की राजनीतिक लीलामृत, जहाँ वर्तमान राजनीति का एक नग्न रूप वर्णित है। वहां राजनीति को झुकाकर कविता की शुरुआत हुई है. लक्षिकान्त पंचतीर्थ की कविता बाणिदूत में भ्रष्टाचार से जुड़े एक प्रोफेसर हैं। ऐसे भ्रष्टाचार, हिंसा, नफरत आदि के खिलाफ श्रीजीव न्याय तीर्थ के चंदनतांडवम के अलावा तारापादभट्टाचार्य के बिषमप्यामृतम, 'अथ वेजल कथा' में भ्रष्टाचार की गहरी छाप देखी जाती है। सिद्धेश्वर चटर्जी के नाटक 'अथ किम' में कवि ने सूत्रधार की वाणी के माध्यम से वर्तमान भ्रष्ट सामाजिक व्यवस्था के नग्न चेहरे का सुंदर वर्णन किया है।

(कुछ और उदाहरण जोड़े जा सकते हैं) चलो, हम भ्रष्टाचार, धोखे, झूठ के बारे में घंटों बात कर सकते हैं, हम विशिष्ट समय को ध्यान में रखते हुए ब्रेक लेंगे, भ्रष्टाचार या लोगों को लोगों से धोखा देना, झूठ वास्तव में निंदनीय है। लेकिन अगर ये चीजें न होतीं तो कोई भी मामला जेलो–ए–घिंगेमी बनकर रह जाता, अगर किसी साहित्य में खलनायकों की जगह सिर्फ नायक होते तो कैसा लगता? रामायण की कहानी के बारे में सोचिए, मंथरा के बिना, शकुनि के पासों के खेल के बिना, द्रौपदी का वस्त्रहरण हो जाता, कुरूक्षेत्र का युद्ध किसी भी दिन हो जाता? क्या कोई युद्ध है? कोई जीत या हार नहीं।

क्या कभी कुछ होगा? नहीं, मैं युद्ध के पक्ष में नहीं हूं, बल्कि इसलिए कि ये सब है, सारी कहानियां हैं, सारी घटनाएं हैं या साहित्य है – हर जगह भ्रष्टाचार के राज में हर चीज सौंदर्यपरक चीज बन जाती है। हां, भ्रष्टाचार का शिकार होने पर मन बोझिल हो जाता है, लेकिन हृदय में बैठे इन धोखेबाज

लोगों के बिना समाज के अस्तित्व का एहसास नहीं हो सकता। और इस सत्य को स्वीकार कर लेना ही बेहतर है कि अच्छे–बुरे, न्याय–सिद्धांत–छल, भ्रष्टाचार, सत्य–असत्य ये सभी प्रवर्षत्तियाँ कमोबेश हम सभी में विद्यमान हैं। और रहना सामान्य बात है। लेकिन यह समझना बेहतर है कि कब किसका आश्रय लेना है, केवल विवेक और बुद्धि से निर्णय करना है, कार्य को केवल व्यक्तिगत हित के लिए नहीं करना है, सामूहिक हित के लिए नहीं?

विज्ञान – आशीर्वाद या अभिशाप की तरह ही नैतिकता या भ्रष्टाचार का प्रयोग विशेष क्षेत्रों और बुराइयों में लाभ दे सकता है। हालाँकि, हम सभी समझदार लोग चाहते हैं कि दुनिया अधिक समृद्ध हो, सभी लोग ईमानदार हों, अच्छी समझ विकसित हो, सभी खुशी और आराम से रहें। हमारे मन से सभी ईर्ष्या, घृणा, लालच, मूर्खता, चिंता, क्षुद्र स्वार्थ दूर हो जाएं। हम सभी सामूहिक रूप से सभी बाधाओं को पार करते हुए एक खूबसूरत दुनिया का सपना देखते हैं–

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग् भवेत।।

सन्दर्भ

1. चक्रवर्ती, सत्यनारायण. सम्पा0. (2008). अभिज्ञानशकुन्तलम. संस्कृत पुस्तक भाण्डार।
2. वसु, अनिलचन्द्र. सम्पा0. (2015). अभिज्ञानशकुन्तलम. संस्कृत वुक डिपो।
3. वन्द्योपाध्याय, मानवेन्दु. सम्पा0. (2001). कौटिलीयार्थशास्त्रम. संस्कृत पुस्तक भाण्डार।
4. त्रिपाठी, जयशंकरलाल. सम्पा0. (2002). मृच्छकटिकम. कृष्णदास आकादमीः वाराणसी।
5. सिंह, कालीप्रसन्न. सम्पा0. महाभारतम. वेणीमाधवशील लाइब्रेरी. 1417.
6. झा, रामचन्द्र. सम्पा0. (1985). पञ्चतन्त्रम. चौखम्बा विद्याभवन।